ओम शान्ति, ब्रह्माकुमारीज शान्तिसरोवर के दशाब्दी समारोह में आंध्रप्रदेश के मा.मुख्यमंत्री भ्राता चंद्रबाबू नायडूजी ने सभा को संबोधित करते हुए कहा कि,

यहां पहुंचने के बाद और आप सभी को देखने के बाद मुझे ऐसा अनुभव हुआ कि ऐसा शान्त आध्यात्मिक वातावरण शायद ही कहीं और होगा। एक भरपूर शान्ति का अनुभव आप सभी को देखने के बाद हुआ। इसके लिए मैं आप सभी का आभिवादन करता हुँ।

आज से दस वर्ष पूर्व कुछ लोगों के कहने पर मैं माउन्ट आबू पहुंचा। वहां पहुंचने के बाद मुझे ऐसा महसूस हुआ कि दृढ़ता का दूसरा नाम ही ब्रह्माकुमारीज है।कयोंकि यह ब्रह्माकुमारीज जिस किसीको भी बदलने का ठान लेते है तो तब तक उसका पीछा नही छोडते जब तक की उसके जीवन में परिवर्तन न आये।जब मैं वक्त मैं मुख्यमंत्री के पद पर व्यस्त था। ब्रह्माकुमारीज बहनें बारबार मेरे पास आकर आग्रह करते थे कि आप एक बार माउन्ट आबू का दर्शन आवश्य कीजिए। दादीजी का आशीर्वाद लीजिए। अत: मैं माउन्ट आबू पहुंचा और वहां उस स्थान को ५/६ घंटे निरिक्षण करने के बाद मुझे लगा कि दुनिया के श्रेष्ठतम् मैनेजमेंट गुरुओंको भी मात देनेवाली ब्रह्माकुमारीज की व्यवस्था और प्रबंधन है। मैंने देखा कि २० हजार लोगों की सभा में भी सभी को लगभग १८ भाषाओं में अनुवाद की सुविधा उपलब्ध है। किसी को रिंचक मात्र भी कोई तकलीफ नही। यह देखकर मैं दंग रह गया। सभी लोग इतने लंबे समय तक बिना किसी झुंझुलाहट के शांत बैठे हुए थे। यदि आप किसी ऑफिस में जायेंगे तो देखेंगे कि या तो कर्मचारी सुस्ती करेंगे या नींद करेंगे और उठाने पर झल्लायेंगे।

मैने पाया कि प्रेम का दूसरा नाम ही ब्रह्माकुमारीज है। यहां का वातावरण इतना शान्त है कि समय बीतने का पता ही चला। यहां मैं एक घंटे का समय लेकर आया था लेकिन अभी २ घंटे बीत गये और मुझे समय का पता ही नही चला।

माउन्ट आबू में मैने देखा कि बड़े बड़े लोग स्वयं भोजन बना रहे है , खुद परोस भी रहे है और सफाई भी कर रहे है। मुझे यह कहने में कोई अतिशयोक्ति नही कि यह एक अद्भुत संस्था है और समाज में परिवर्तन लाना ब्रह्माकुमारीज के द्वारा ही संभव है। अत: मैने सोचा कि माउन्ट आबू के समान ही हैदराबाद में भी एक बेस्ट सेंटर की स्थापना हो। इस प्रकार का प्रस्ताव मैने उनके आगे रखा। शहर से दूर गच्चिबाउलि का स्थान बहुत ही पथरीला और खड्डों से भरा हुआ था। इस एकान्त स्थान पर मैने सिर्फ ईन्फोसिस और आय.एस बी. के लिए ही जगह थी। क्योंकि उनका पेशा काफि तनावग्रस्त होता है। अत: ब्रह्माकुमारीज अकादमी के लिए भी यही स्थान मैने उपयुक्त समझा। इस स्थान पर मैने अकादमी फॉर ए बेटर वर्ल्ड एण्ड बेटर टुमारो की अपेक्षा की थी लेकिन यहां आकर मैने देखा कि अकादमी फॉर बेटर वर्ल्ड एण्ड बेटर टुमारो नही बल्कि बेटर फॉर एवर है। मुझे बताया गया कि इस पथरीली जमीन पर अभी फूलों का उद्यान बनाया गया है। लेकिन मै देखता हूं कि यह फूलों का उद्यान नही लेकिन सोने का उद्यान है। उन्हों ने रंजना कुमार जो कि पूर्व में विजिलेंस कमिश्नर थे, उनका हवाला देते हुए कहा कि कैसे वे अपनी जीवन में सम्मान्नित पद को प्राप्त करने के बाद अभी भी ब्रह्माकुमारीज की शिक्षाओं को अपने जीवन के लिए उपयोगी समझते है। मैने देखा उनके जीवन में कोई निराशा नही वेदना नही, इस संस्था से जुडकर वे निश्चिन्त जीवन बिता रहे है। मैने देखा ब्रह्माकुमारीज का जीवन टेन्शन फ्री है। क्योंकि इनके जीवन में कोई अनावश्यक ईच्छायें नही है। सभी समस्याओंका मूल कारण व्यर्थ ईच्छाये है। ब्रह्माकुमारीज दूसरों के जीवन में शान्ति और प्रकाश फैलाने का कार्य कर रही है। मै उनका अभिवादन करता है।

१३० से भी अधिक देशों में ८५०० से भी अधिक शाखायें और दस लाख से भी अधिक इनके स्टुडन्ट है। सारे विश्व में इनके यहां जो मुरली पढ़ी जाती है उसमे से प्रतिदिन एक श्रेष्ठ विचार स्लोगन के रुप में सभी को प्रेषित किया जाता है जो और किसी संस्था के द्वारा नही किया जाता।

अमेरिकन कल्चर का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि वहां पर लोंगो को अनेक बार शादी करने और तलाक देने की प्रथा आम है। ६० वर्ष के बाद वहा के लोग निष्क्रिय और समाज के लिए बोझ बन जाते है। लेकिन मैने यहां देखा कि दादी जानकीजी अगले मास में अपने १०० वर्ष पूरे करने वाले है। और दादी रत्नमोहिनी अगले वर्ष में अपने ९० पूरे करने वाले है। लेकिन उनमें कतई वृद्धावस्था के चिन्ह दिखाई नही देते। अभी भी चुस्त और फुर्त है। यह ब्रह्माकुमारीज की जीवनशैली का प्रमाण है।

यह संस्था महिला प्रधान है। लेकिन पुरुष भी इस संस्था के कार्य में सहयोगी है। मैं भी इस संस्था के कार्य में सहयोग देने के लिए तत्पर हूँ। ब्रह्माकुमारीज के जीवन में जो खुशी दिखाई देती है उसका मुख्य कारण है कर्तव्य प्रति उनकी निष्ठा। मैं चाहता हूँ कि हर व्यक्ति व्यस्त रहे, उसके कर्म शुभ हो, कर्तव्य परायण हो तो उसके जीवन में कभी भी टेन्शन नही होगा, अशान्ति नही आयेगी। इस प्रकार से मूल्यों का बोध करनेवाली ब्रह्माकुमारीज एक मात्र संस्था है। पूर्व में मैने गवर्नमेंट टीचर्स को इस शा्नतिसरोवर अकादमी में ट्रेनिंग के लिए भेजा था, क्योंकि मेरा विश्वास है टीचर्स के ट्रेनिंग के द्वारा सैंकड़ों विद्यार्थियों को लाभ पहुंचा सकेंगे और आनेवाली पीढी को भी इसका फायदा होगा। उन्हों ने आग्रह किया कि गवर्नमेंट ऑफिसर्स व टीचर्स के लिए ट्रेनिंग प्रोग्राम की एक ऐसी रुपरेखा तैयार करे जिससे वे ट्रेनिंग प्राप्त करके अपने व्यवसाय व कार्यक्षेत्र में सशक्त होकर आगे बढ़े और सफलता प्राप्त करे। आगे उन्होंने कहा कि शान्तिसरोवर के परिसर का अवलोकन करने के बाद मैं काफी तृप्त और संतुष्ट हूँ। क्योंकि ब्रह्मकुमारीज ने इस स्थान को एक सुंदर शैक्षणिक अनुसंधान संस्थान के रुप में विकसित किया है। मैं समझता हूँ कि दस वर्ष पूर्व मैने यह स्थान देने का जो निर्णय लिया था वह बिलकुल उचित था। आगे उन्हों ने कहा कि आंध्रप्रदेश के ३ जिलों विजयवाड़ा, वैजाक और तिरुपति में भी स्थान देने के लिए तैयार हूँ और चाहता हूँ कि इन तीनों स्थानों पर भी अच्छे से अच्छे रिट्रिट सेंटर का निर्माण हो। साथ साथ आंध्रप्रदेश के पूरे दस जिल्हों मे भी बी.के. सेंटर्स को खोलने का निवेदन किया।

भारत सारे विश्व के लिए एक आध्यात्मिक केंद्र है। भारत की विशिष्टता संसार में हमे कहीं भी देखने को नही मिलती। मैं एक मूल्यनिष्ठ आदर्श समाज की परिकल्पना को साकार रुप देना चाहता हूँ। इस प्रकार के लक्ष्य को कार्यरुप देने के लिए मैं ब्रह्माकुमारीज को पूरी तरह से सहयोग देने के लिए तैयार हूँ।

राजनेता गण अनेक वायदे करते है। मैं बीस बीस का विजन तैयार किया था। उसी का परिणाम सैदराबाद है। जिसके फलस्वरुप शहर का काफी विकास हुआ और अनेकों को रोजगार के अवसर प्राप्त हुए। इसी प्रकार का विजन २०५०, हमें देश के लिए और प्रांत के लिए तैयार करना है।

केवल भौतिक साधनों को जुटाना ही पर्याप्त नही लेकिन मनुष्य के जीवनन में खुशी भी हो। इसलिए मैने हैपिनेस इंडेक्स को मापदण्ड के रुप में लिया है। मेरा ध्येय है कि २०२२ में आंध्रप्रदेश भारत के तीन प्रमुख राज्यों में एक हो, २०२२ में भारत में प्रथम स्थान पर हो। और २०५० में सारे विश्व में शीर्ष स्थान पर हो। मानव जीवन के लिए केवल भौतिक साधन ही पर्यप्त नही है लेकिन उसके साथ साथ मानसिक आनंद आवश्यक है और इस आनंद को प्राप्त करने का साधन है आध्यात्मिकता। इस आध्यात्मिकता को बढ़ावा देने के लिए संसार कि एकमात्र संस्था यही ब्रह्माकुमारीज है। मैं जिस किसी भी ग्राम मे जाता हुँ तो ब्रह्माकुमारी बहने बहुत ही प्रेम और आदर से मेरा आवभगत करती है। विश्व को शान्ति देने के इन ब्रह्माकुमारीज के कार्यों मे सहयोग देने के लिए मैं पूरी तरह से तैयार हूँ। इस कार्यक्रम को देखने के पश्चात मैं विश्वास पूर्वक कह सकता हूँ कि संसार में कोई भी कार्य असंभव नही है। यह ब्रह्माकुमारीज ने प्रमाणित करके दिखाया। किसी भी ऑफिस में जायेंगे तो कोई भी काम के लिए रिश्वत मांगेगे। रिश्वत से तो काम बिघड़ेगा, बनेगा नही। इसमे चाहिए एक श्रेष्ठ संकल्प, और उस श्रेष्ठ संकल्प की सिद्धी का प्रमाण है ब्रह्माकुमारीज। रंजना कुमार जी का उल्लेख करते हुए कहा कि आजकल मनुष्य नकारात्मक विचारों से पीडित है। निगेटिव थिंकिग के द्वारा दुसरों का नुकसान तो नही होगा, लेकिन जो निगेटिव थिंकिंग करता है उसका ही स्वास्थ्य और मानसिक संतुलन बिगड़ जाता है। आज के समय में मेडिटेशन की काफी जरुरी है। मैं देखता हूँ की कई संपन्न परिवारों मे सभी सुख के साधन उपलब्ध होते हुए भी वे तनाव और अवसाद के रोग से ग्रसित है। अत: उन्हों के लिए चाहिए तनाव मुक्त जीवन, लाइफ मैनेजिंग स्किल्स, हारमनि इन रिलेशनशिप,एंगर मैनेजमेन्ट आदि कोर्सेस का प्रशिक्षण।

अकारणे कई लोग क्रोध, आवेश जैसे बिमारियों से ग्रस्त है। ऐसे लोगों को यहां लाकर ट्रेनिंग देने के आवश्यकता है। मुझे पूरा विश्वास है कि चाहे किसी को किसी भी प्रकार की समस्या क्यों न हो, उनकी सर्व समस्याओं को हल करने का समाधान ब्रह्माकुमारीज संस्था के पास है। मार्च में होनेवाले दादी जानकी जी के जन्मदिन शताब्दी के समारोह के उपलक्ष्य में माउन्ट आबू जाने की इच्छा व्यक्त की। आगे उन्हों ने आंध्रप्रदेश उच्च न्यायालय के पूर्व मुख्य न्यायधीश भ्राता ईश्वरय्याजी और पूर्व सी.बी.आय. डायरेक्टर भ्राता कर्तिकेयनजी को आंध्रप्रदेश में ३ सुंदर रिट्रीट सेंटर्स ३ वर्ष के अंदर बनवानेका उतरदायीत्व सौंपा। उन्हों ने शान्तिसरोवर के डायरेक्टर राजयोगीनी कुलदीप बहन का उल्लेख करते हुए कहा कि वे इस अकादमी के डायरेक्टर होते हुए भी काफी धीरज से सभी बहनों को साथ लेकर लोककल्याण के कार्य में आगे बढ़ रहे है। मैं उनका अभिवादन करता हूँ। इस प्रकार से उन्हों ने ब्रह्माकुमारीज द्वारा होनेवाले आगामी कार्यक्रमों के लिए भी अपनी शुभकामनायें दी।